IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

एक–दल प्रधानता का पुनरुत्थान और क्षेत्रीय राजनीति का संकट : राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय दलों की बदलती भूमिका

शोधार्थी :– जीवन दान

राजनीति विज्ञान विभाग ,

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

शोध पर्यवेक्षक :– डॉ. लाल कृष्ण शर्मा

शोध सारांश – प्रस्तुत शोध पत्र स्वतंत्र भारत के दलीय इतिहास में आए वैचारिक और संरचनात्मक परिवर्तनों का एक क्रमिक और सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय राजनीति की यात्रा स्वतंत्रता के बाद जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी के नेतृत्व में 'कांग्रेस प्रणाली' के एक–दल प्रधानता वाले दौर से शुरू हुई थी। यह ऐतिहासिक दौर नेहरू–गांधी परिवार के वर्चस्व, सत्ता के अत्यधिक केंद्रीयकरण और निर्णयों में अधिनायकवादी प्रवृत्तियों का गवाह रहा, जिसकी परिणति 1975 के आपातकाल के रूप में हुई। 1980 के दशक के उत्तरार्ध में इस पारिवारिक वर्चस्व के अवसान के बाद भारतीय लोकतंत्र में ''क्षेत्रीयकरण'' और गठबंधन सरकारों का युग आया। परंतु, समकालीन दौर में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) द्वारा लगातार तीन बार (2014, 2019 और 2024) केंद्र में सरकार की पुनरावृत्ति करना 'एक–दल प्रधानता' के एक नए, विकासवादी और लोक–कल्याणकारी स्वरूप को दर्शाता है। वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव और उसके तुरंत बाद हुए राज्यों (हरियाणा, महाराष्ट्र, बिहार और मई 2026 में पश्चिम बंगाल) के विधानसभा चुनावों के परिणाम यह सिद्ध करते हैं कि नव–कल्याणवाद और मजबूत केंद्रीय सुशासन के सामने क्षेत्रीय दलों का पारंपरिक आधार और सांगठनिक ढांचा ध्वस्त हो रहा है। प्रस्तुत शोध इसी बदलते परिदृश्य में क्षेत्रीय राजनीति के अस्तित्वगत संकट और उनके विखंडन (Splits) का आलोचनात्मक मूल्यांकन करता है।

संकेताक्षर :– एक–दल प्रधानता, कांग्रेस प्रणाली, नेहरू–गांधी परिवार, आपातकाल, न्यू–वेलफेयरिज्म, सांगठनिक बिखराव।

1. प्रस्तावना – भारतीय लोकतंत्र की यात्रा दलीय व्यवस्था के निरंतर बदलते स्वरूपों की एक जीवंत दास्तान है। समकालीन समय में भारतीय राजनीति जिस मुकाम पर खड़ी है, वह एक ऐतिहासिक संरचनात्मक बदलाव को दर्शाती है। एक तरफ जहाँ केंद्र में एक–दल प्रधानता का पुनरुत्थान हुआ है, वहीं दूसरी तरफ क्षेत्रीय राजनीति एक अभूतपूर्व अस्तित्वगत संकट का सामना कर रही है।

1.1 स्वतंत्रता के बाद का राजनीतिक परिदृश्य और 'कांग्रेस प्रणाली' –

स्वतंत्रता के ठीक बाद भारतीय राजनीति का पहला चरण पूरी तरह से एक–दल वर्चस्व का काल था। जवाहरलाल नेहरू और बाद में इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी ने केंद्र से लेकर लगभग सभी राज्यों की सत्ता पर एकछत्र राज किया। प्रसिद्ध राजनीति विज्ञानी रजनी कोठारी ने इस दौर को कांग्रेस प्रणाली के रूप में परिभाषित किया था। (1)

1.2 नेहरू और गांधी परिवार का अति–केंद्रीयकरण एवं तानाशाही प्रवृत्तियां –

भारतीय दलीय व्यवस्था का इतिहास गवाह है कि स्वतंत्र भारत में एक–दल के आतंक और वास्तविक तानाशाही प्रवृत्तियों की नींव नेहरू–गांधी परिवार के कार्यकाल में ही पड़ी। इस दौर में पार्टी ही राज्य है और इंदिरा ही इंडिया है का नैरेटिव स्थापित किया गया, जिसने लोकतांत्रिक संस्थाओं को भारी क्षति पहुँचाई। (2)

इस पारिवारिक तानाशाही को निम्नलिखित तीन मुख्य आयामों के माध्यम से समझा जा सकता है :–

- संस्थागत विखंडन और निर्णयों में अधिनायकवाद :– जवाहरलाल नेहरू के समय से ही सत्ता का केंद्र बिंदु प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO) और नेहरू परिवार के इर्द–गिर्द सिमटना शुरू हो गया था, जहाँ कैबिनेट के अन्य मंत्रियों की भूमिका गौण हो गई थी। इंदिरा गांधी के दौर में यह प्रवृत्ति अपने चरम पर पहुँच गई। संसद, कैबिनेट और यहाँ तक कि न्यायपालिका की स्वतंत्रता को दरकिनार कर सारे निर्णय एक ही सर्वोच्च पारिवारिक नेता द्वारा लिए जाने लगे। (3)
- अनुच्छेद 356 का व्यापक दुरुपयोग (क्षेत्रीय शक्तियों का दमन) :– नेहरू और इंदिरा गांधी की सरकारों ने राज्यों में उभरने वाले शुरुआती क्षेत्रीय नेतृत्व और विपक्षी सरकारों को कुचलने के लिए संविधान के अनुच्छेद 356 (राष्ट्रपति शासन) का रिकॉर्ड तोड़ दुरुपयोग किया। केरल में पहली कम्युनिस्ट सरकार (1959) को नेहरू सरकार द्वारा बर्खास्त करना और इंदिरा गांधी द्वारा दर्जनों बार चुनी हुई राज्य सरकारों को गिराना, क्षेत्रीय राजनीति के प्रति उनके दमनकारी रवैये को सिद्ध करता है। (4)
- 1975 का आपातकाल (Emergency) :– इस पारिवारिक तानाशाही की सबसे क्रूर परिणति 25 जून 1975 को आपातकाल की घोषणा के रूप में हुई। अपनी कुर्सी बचाने के लिए इंदिरा गांधी ने पूरे देश को एक जेलखाने में तब्दील कर दिया, प्रेस पर सेंसरशिप लगा दी और जयप्रकाश नारायण, अटल बिहारी वाजपेयी, एल.के. आडवाणी सहित देश के तमाम विपक्षी और क्षेत्रीय नेताओं को जेल में डाल दिया। यह दौर भारतीय लोकतंत्र पर एक–दल और एक परिवार की तानाशाही का सबसे काला धब्बा है।
- ''पारिवारिक लिमिटेड कंपनी'' का उदय :– इस व्यवस्था का सबसे घातक परिणाम यह हुआ कि कांग्रेस एक वैचारिक सांगठनिक दल से बदलकर 'नेहरू–गांधी वंश' की एक निजी जागीर (Family&led Enterprise) बन गई।(5) यहाँ आंतरिक सांगठनिक चुनावों को पूरी तरह ठप कर दिया गया और योग्यता के बजाय केवल परिवार के प्रति वफादारी को ही पार्टी का अंतिम पैमाना बना दिया गया।

1.3 कांग्रेस प्रणाली का पतन और राजनीति का क्षेत्रीयकरण –

1980 के दशक के उत्तरार्ध में इस पारिवारिक और दमनकारी केंद्रीय ढांचे के खिलाफ जनता का आक्रोश फूटा। वर्ष 1989 का आम चुनाव भारतीय राजनीति में एक युगांतकारी मोड़ साबित हुआ, जहाँ से कांग्रेस के एक–परिवार वर्चस्व का अंत हुआ और भारतीय राजनीति का तेजी से क्षेत्रीयकरण हुआ।(6) इसके बाद का ढाई दशक (1989–2014) गठबंधन सरकारों का युग कहलाया, जहाँ क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय राजनीति में बेहद मजबूत हो गए।

1.4 2014 के बाद का नव–वर्चस्ववादी दौर और 2024 की निरंतरता –

वर्ष 2014 में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को मिले पूर्ण बहुमत ने इस क्षेत्रीय विखंडन के दौर पर विराम लगा दिया। इसे राजनीति विज्ञानियों ने भारत की 'दूसरी प्रभावी दलीय

व्यवस्था' का नाम दिया है।[7] 2019 और फिर 2024 के आम चुनावों में लगातार तीसरी बार इस सरकार की पुनरावृत्ति ने यह सिद्ध कर दिया कि देश एक बार फिर 'एक–दल प्रधानता' के दौर में लौट चुका है। परंतु, यह नव–वर्चस्व नेहरू–गांधी के दमनकारी दौर से बिल्कुल अलग है, क्योंकि यह किसी परिवार की सत्ता को बचाने के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, मजबूत सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, वैश्विक साख और पारदर्शी सुशासन के व्यापक विमर्श पर आधारित है।

2. 2024 लोकसभा चुनाव के डेटा का सांख्यिकीय और रणनीतिक विश्लेषण

वर्ष 2024 के 18वें लोकसभा चुनाव के आंकड़े भारतीय लोकतंत्र में आ रहे इस संरचनात्मक बदलाव को सांख्यिकीय रूप से प्रमाणित करते हैं।[8]

सीटों का गणित :– भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) 240 सीटों के साथ सबसे बड़े राजनीतिक दल के रूप में उभरी और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) के सहयोगियों (TDP और JDU) के साथ कुल 293 सीटों का आंकड़ा छूकर नरेंद्र मोदी ने लगातार तीसरी बार सरकार बनाई ।[9] विपक्षी इंडी गठबंधन ने 234 सीटें हासिल कीं, जिसमें कांग्रेस 99 सीटों पर सिमट के रह गई।[10]

क्षेत्रीय दलों का सिकुडता वोट शेयर :– इस चुनाव का सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक पहलू यह रहा कि भाजपा ने राष्ट्रीय स्तर पर 36.56% का विशाल पॉपुलर वोट शेयर बरकरार रखा। यह डेटा साबित करता है कि भारतीय मतदाता अब चुनाव को राष्ट्रीय ध्रुवों की तरफ ले जा रहे हैं, जिससे क्षेत्रीय दलों की सौदेबाजी की शक्ति बेहद कम हुई है।[11]

ऐतिहासिक महिला मतदाता भागीदारी और नव–कल्याणवाद :– वर्ष 2024 के चुनाव में कुल 64.64 करोड़ वोट पड़े, जिसमें महिला मतदाताओं की भागीदारी 65.78% रही ।[12] केंद्र सरकार द्वारा सीधे लाभार्थियों तक राशन, आवास और वित्तीय मदद पहुँचाने की नीति, ने इस बड़े मूक मतदाता वर्ग को सीधे केंद्र से जोड़ा और क्षेत्रीय दलों के पारंपरिक जातिगत समीकरणों को ध्वस्त कर दिया।[13]

3. 2024 के बाद राज्यों के चुनाव परिणाम और क्षेत्रीय राजनीति का अंत –

लोकसभा चुनाव के तुरंत बाद विभिन्न राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों के परिणाम क्षेत्रीय राजनीति के अस्तित्व संकट को पूरी तरह उजागर करते हैं :–

3.1 हरियाणा (अक्टूबर 2024) : किंगमेकर्स का अवसान –

लगातार 10 वर्ष सत्ता में रहने के बाद भी भाजपा ने हरियाणा की 90 सदस्यी विधानसभा में 48 सीटें जीतकर पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाई । इस चुनाव का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु यह रहा कि 2019 के चुनाव में 10 सीटें जीतकर किंगमेकर की भूमिका निभाने वाली दुष्यंत चौटाला की जननायक जनता पार्टी (JJP) इस चुनाव में 0 सीट पर सिमट गई । जनता ने क्षेत्रीय विखंडन के बजाय स्थिर एकल–पार्टी शासन को चुना।[14]

3.2 महाराष्ट्र (नवंबर 2024) : 'लाड़की बहिन योजना' बनाम क्षेत्रीय पहचान –

महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में भाजपा के नेतृत्व वाले 'महायुति' गठबंधन ने 288 में से 230 सीटों पर प्रचंड जीत दर्ज की, जिसमें अकेले भाजपा 132 सीटें जीतकर राज्य की सबसे बड़ी अजेय शक्ति बन गई ।[15] महायुति सरकार की ''माझी लाड़की बहिन योजना'' (महिलाओं को ₹1,500 प्रति माह की सीधी वित्तीय सहायता) ने विपक्षी महा विकास अघाड़ी (MVA) के क्षेत्रीय अस्मिता और सहानुभूति के नैरेटिव को पूरी तरह मटियामेट कर दिया।[16]

3.3 बिहार की ऐतिहासिक राजनीतिक टूट और नेतृत्व का परिवर्तन (2024–2026) –

बिहार में क्षेत्रीय शक्तियों का संकट केवल चुनावी हार तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह क्षेत्रीय अस्मिता के आत्मसमर्पण के रूप में सामने आया :–

- बार–बार पाला बदलना :– जनवरी 2024 में नीतीश कुमार ने विपक्षी 'INDIA' गठबंधन का साथ छोड़कर पुनः भाजपा के साथ सरकार बनाई। इस बार–बार होने वाले दलीय परिवर्तन ने क्षेत्रीय दलों की वैचारिक साख को जनता की नजरों में पूरी तरह समाप्त कर दिया।
- नीतीश कुमार युग का अंत और भाजपा का मुख्यमंत्री (मार्च–अप्रैल 2026) :– मार्च 2026 में बिहार की राजनीति में एक ऐतिहासिक युगांतकारी मोड़ आया, जब नौ बार के मुख्यमंत्री रहे नीतीश कुमार ने राज्य की सक्रिय राजनीति को छोड़ राज्यसभा का रुख किया। इसके तुरंत बाद, अप्रैल 2026 में भाजपा के सम्राट चौधरी बिहार के नए मुख्यमंत्री बने। इस घटनाक्रम ने बिहार की राजनीति से दो दशकों के क्षेत्रीय एकछत्र राज (जदयू–राजद) को समाप्त कर सीधे तौर पर एक–दल प्रधानता (भाजपा शासन) का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

3.4 पश्चिम बंगाल (मई 2026) : ऐतिहासिक तख्तापलट

मई 2026 के हालिया विधानसभा चुनाव में भाजपा ने भारत के सबसे मजबूत क्षेत्रीय गढ़ पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी के 15 वर्षीय एकछत्र शासन को उखाड़ फेंका। भाजपा ने 207 सीटों के साथ दो–तिहाई बहुमत हासिल किया, जबकि तृणमूल कांग्रेस (AITC) महज 80 सीटों पर सिमट गई। यह परिणाम इस शोध पत्र के केंद्रीय सिद्धांत को पूरी तरह प्रतिपादित करता है कि केंद्र की लोक–कल्याणकारी योजनाओं और डबल इंजन सरकार के नैरेटिव ने राज्यों की क्षेत्रीय तानाशाही को पूरी तरह समाप्त कर दिया है।[17]

4. क्षेत्रीय दलों का अस्तित्व संकट और पार्टियों में ऐतिहासिक टूट –

2024 के बाद क्षेत्रीय राजनीति का संकट केवल चुनाव हारने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सांगठनिक आत्मघाती दौर में बदल चुका है :–

4.1 महाराष्ट्र का सांगठनिक विखंडन

महाराष्ट्र की राजनीति में क्षेत्रीय दलों का बिखराव इसका सबसे ज्वलंत उदाहरण है। बालासाहेब ठाकरे द्वारा स्थापित शिवसेना दो फाड़ हो गई, जिसमें एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले धड़े को चुनाव आयोग ने असली शिवसेना का नाम और सिंबल सौंप दिया। उद्धव ठाकरे की शिवसेना (UBT) मात्र 20 सीटों पर सिमट कर रह गई । ठीक इसी प्रकार, शरद पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (NCP) में उनके भतीजे अजीत पवार ने विद्रोह किया और बड़े सांगठनिक हिस्से के साथ सरकार में शामिल हो गएय शरद पवार की पार्टी (NCPSP) महज 10 सीटों पर सिकुड़ गई ।

4.2 राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय दलों की बदलती भूमिका

इस अभूतपूर्व संकट के बीच, क्षेत्रीय दल खुद को बचाए रखने के लिए अपनी भूमिका को पुनर्गठित कर रहे हैं :–

1. **'INDIA' ब्लॉक और सहयोगी की भूमिका** :– क्षेत्रीय दल जो कभी अपने राज्यों में अकेले लड़ने का दंभ भरते थे, वे अब राष्ट्रीय स्तर पर बड़े गठबंधनों का हिस्सा बनने को मजबूर हैं। वे अब ''किंगमेकर'' नहीं बल्कि राष्ट्रीय विमर्श के सहयोगी (Partners) मात्र रह गए हैं।[18]
2. **आर्थिक संघवाद (Fiscal Federalism) का रक्षा कवच** :– क्षेत्रीय दल अब राजनीति को केंद्र–राज्य संबंधों के आर्थिक मोर्चे पर ले जा रहे हैं। वे GST मुआवजे, केंद्रीय करों में राज्यों की हिस्सेदारी और राज्यपालों के कथित हस्तक्षेप को मुख्य मुद्दा बनाकर 'सहकारी संघवाद' की आड़ में अपनी प्रासंगिकता बचाए रखने का प्रयास कर रहे हैं।

निष्कर्ष

समकालीन भारतीय राजनीति वर्तमान में केंद्रीयकरण और क्षेत्रीयकरण के बीच एक अभूतपूर्व संरचनात्मक संक्रमण काल (Transition Phase) से गुजर रही है। शोध यह प्रतिपादित करता है कि वर्ष 1989 से 2014 तक का भारतीय राजनीतिक इतिहास जिसे श्गठबंधन सरकारों का युगश (Era of Coalitions) कहा जाता था, वह अब इतिहास के पन्नों में सिमट चुका है और देश में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व में एक दूसरी प्रभावी दलीय व्यवस्था (Second Dominant Party System) का पुनरुत्थान हुआ है। स्वतंत्रता के बाद की पुरानी कांग्रेस प्रणाली (Congress System) जहाँ विभिन्न सामाजिक गुटों और आंतरिक आम सहमति पर आधारित थी, वहीं वर्तमान नव–वर्चस्ववादी दौर एक सुदृढ़ वैचारिक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, मजबूत सांगठनिक ढांचे और अत्यधिक केंद्रीकृत नेतृत्व के चेहरे पर टिका है, जिसने क्षेत्रीय शक्तियों के पारंपरिक समीकरणों को पूरी तरह से अप्रासंगिक बना दिया है। इस शोध का सबसे महत्वपूर्ण सांख्यिकीय निष्कर्ष यह है कि वर्ष 2024 के 18वें लोकसभा चुनाव में महिला मतदाताओं की रिकॉर्ड 65.78% की भागीदारी और केंद्र सरकार की न्यू–वेलफेयरिज्म (New-Welfarism) यानी प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT) की नीतियों ने सीधे एक विशाल लाभार्थी वर्ग (Beneficiary Voter Base) का निर्माण किया है, जिसने प्रादेशिक स्तर पर क्षेत्रीय दलों की पारंपरिक सामाजिक और जातिगत सोशल इंजीनियरिंग को पूरी तरह से विखंडित कर दिया है।

लोकसभा चुनाव के तुरंत बाद विभिन्न राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों के परिणाम इस शोध पत्र के केंद्रीय सिद्धांत को धरातल पर पूरी तरह सच साबित करते हैं, जहाँ हरियाणा (अक्टूबर 2024) में भाजपा की ऐतिहासिक तीसरी वापसी ने जेजेपी (JJP) जैसी पारंपरिक किंगमेकर क्षेत्रीय ताकतों का पूरी तरह सफाया कर दिया, वहीं महाराष्ट्र (नवंबर 2024) में 'माझी लाड़की बहिन योजना' जैसी व्यापक कल्याणकारी नीतियों के आर्थिक प्रभाव ने विपक्षी गठबंधन के क्षेत्रीय अस्मिता और सहानुभूति के नैरेटिव को पूरी तरह मटियामेट करते हुए महायुति को 230 सीटों की प्रचंड विजय दिलाई। इस संकट का सबसे चरम और युगांतकारी उदाहरण मई 2026 के हालिया पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव परिणाम हैं, जहाँ भाजपा ने 207 सीटों के साथ दो–तिहाई बहुमत हासिल करके ममता बनर्जी और तृणमूल कांग्रेस (AITC) के 15 वर्ष पुराने अभेद्य क्षेत्रीय दुर्ग को उखाड़ फेंका, जो यह प्रमाणित करता है कि केंद्र की डबल–इंजन सरकार का विकासवादी विमर्श अब राज्यों के क्षेत्रीय एकछत्र राज को समाप्त करने की पूर्ण क्षमता रखता है। शोध यह भी उजागर करता है कि क्षेत्रीय राजनीति का यह संकट केवल चुनावी हार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक आत्मघाती सांगठनिक विखंडन का दौर है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण महाराष्ट्र में शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (NCP) के भीतर हुई ऐतिहासिक टूट और असली बनाम नकली की कानूनी जंग है, जिसन यह सिद्ध कर दिया है कि आंतरिक लोकतंत्र (Intra-party Democracy) से शून्य और पारिवारिक लिमिटेड कंपनी (Family-led Enterprises) के रूप में संचालित होने वाले क्षेत्रीय दल केंद्रीय राजनीति के रणनीतिक दबाव के सामने ताश के पत्तों की तरह बिखर रहे हैं। अंततः, यह शाध पत्र यह उद्घोष करता है कि भारत जैसे उपमहाद्वीपीय आकार और अनगिनत सांस्कृतिक विविधताओं वाले देश में प्रादेशिक आकांक्षाओं को पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सकता, परंतु वर्तमान राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय दल अब किंगमेकर की स्वायत्त भूमिका से बाहर निकलकर 'INDIA' ब्लॉक जैसे राष्ट्रीय गठबंधनों में जूनियर पार्टनर के रूप में केवल रक्षात्मक संघवाद (Fiscal Federalism) और राजभवनों के हस्तक्षेप को मुद्दा बनाकर अपने अस्तित्व की अंतिम लड़ाई लड़ रहे हैं, और यदि आने वाले समय में ये दल वंशवाद के चंगुल से बाहर निकलकर सुशासन (Governance) का कोई प्रगतिशील मॉडल पेश नहीं कर पाते, तो ''एक–दल प्रधानता'' का यह पुनरुत्थान भारतीय लोकतंत्र को स्थायी रूप से एक ''द्वि–दलीय व्यवस्था'' (Two-Party System) की ओर धकेल देगा जहाँ क्षेत्रीय शक्तियों की भूमिका मात्र एक गौण सहयोगी तक ही सीमित रह जाएगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. कोठारी, रजनी (1964). ''द कांग्रेस सिस्टम इन इंडिया'' (भारत में कांग्रेस प्रणाली), एशियन सर्वे, खंड 4, संख्या 12, पृष्ठ 1161–1173।
2. रुडोल्फ, एल. आई. एवं रुडोल्फ, एस. एच. (1987). इन परस्यूट ऑफ लक्ष्मी : द पॉलिटिकल इकोनॉमी ऑफ द इंडियन स्टेट (लक्ष्मी की तलाश में : भारतीय राज्य की राजनीतिक अर्थव्यवस्था), यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस. (नेहरू–गांधी परिवार के अति–केंद्रीयकरण का ऐतिहासिक विवरण)।
3. ऑस्टिन, ग्रैनविले (1999). वर्किंग ए डेमोक्रेटिक कॉन्स्टिट्यूशन : द इंडियन एक्सपीरियंस (एक लोकतांत्रिक संविधान का संचालनः भारतीय अनुभव), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. (आपातकाल और लोकतांत्रिक संस्थाओं के दमन का ऐतिहासिक दस्तावेज)।
4. ब्रास, पॉल आर. (1994). द पॉलिटिक्स ऑफ इंडिया सिंस इंडिपेंडेंस (स्वतंत्रता के बाद से भारत की राजनीति), कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस. (अनुच्छेद 356 के दुरुपयोग और क्षेत्रीय सरकारों को बर्खास्त करने के आधिकारिक आंकड़े)।
5. चड्ढा, माया (2023). ''डायनैस्टिक पॉलिटिक्स एंड द क्राइसिस ऑफ रीजनल पार्टीज इन इंडिया'' (वंशवादी राजनीति और भारत में क्षेत्रीय दलों का संकट), जर्नल ऑफ डेमोक्रेसी, खंड 34, संख्या 2।
6. यादव, योगेंद्र (1996). ''रीकॉन्फिगरिंग इंडिया : द थर्ड इलेक्टोरल सिस्टम'' (भारत का पुनर्गठन : तीसरी चुनावी व्यवस्था), इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, खंड 31, संख्या 2/3, पृष्ठ 95–104 ।
7. पल्शीकर, सुहास (2019). ''इंडियाज सेकेंड डोमिनेंट पार्टी सिस्टम'' (भारत की दूसरी प्रभावी दलीय व्यवस्था), इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, खंड 54, संख्या 11.
8. भारत निर्वाचन आयोग (ECI) रिपोर्ट (2024). ''18वीं लोकसभा चुनाव के आधिकारिक आंकड़े और सांख्यिकीय विश्लेषण।''
9. विकिपीडिया (2024). ''2024 के भारतीय आम चुनाव के परिणाम और दलीय स्थिति।''
10. अल जजीरा मीडिया रिपोर्ट (2024). ''भारत चुनाव 2024 : सीटों का समीकरण और गठबंधन विश्लेषण।''
11. लोकनीति–सीएसडीएस (Lokniti-CSDS) चुनाव अध्ययन (2024). ''राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन 2024 : मतदान के बाद का डेटा और दलीय प्रदर्शन।''
12. पत्र सूचना कार्यालय (PIB) भारत सरकार (2024). ''18वीं लोकसभा में महिला मतदाताओं की ऐतिहासिक भागीदारी और जनसांख्यिकी।''
13. आनंद, पी. एवं सुब्रमण्यम, अरविंद (2021). ''न्यू–वेलफेयरिज्म ऑफ इंडियाज राइट–विंग'' (भारत के दक्षिणपंथ का नया कल्याणवाद), जर्नल ऑफ इकोनॉमिक परस्पेक्टिव्स, खंड 35, संख्या 3।
14. इंडियावोट्स (2024). ''हरियाणा विधानसभा चुनाव 2024 – आधिकारिक सांख्यिकीय रिपोर्ट।''
15. पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च (PRS India) (नवंबर 2024). ''15वीं महाराष्ट्र विधानसभा के महत्वपूर्ण चुनावी आंकड़े और राजनीतिक प्रोफाइल।''
16. द हिंदू समाचार पत्र विश्लेषण (2024). ''महाराष्ट्र में 'माझी लाड़की बहिन योजना' ने राजनीतिक विमर्श को कैसे बदला।''
17. भारत निर्वाचन आयोग (मई 2026). ''पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव परिणाम 2026 : रुझान और आधिकारिक आंकड़े।''
18. शास्त्री, संदीप (2025). फ्रॉम किंगमेकर्स टू कोएलिशन पार्टनर्स द इवॉल्विंग ट्रेजेक्टरी ऑफ रीजनल पार्टीज (किंगमेकर्स से गठबंधन सहयोगियों तक : क्षेत्रीय दलों का बदलता प्रक्षेपवक्र), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस इंडिया।